युवा जीवन

नवंबर 2021

यहोवा गमोलाह

क्योंकि उसने पश्चाताप किया, परमेश्वर ने उसे मृत्यु से बचाया किन्तु अपनी तलवार उसके घराने पर ले आया।

यहोवा - गमोलाह का अर्थ है
भरपाई (पुनर्भुगतान) के परमेश्वर

प्राक्कथन

वह न्याय स्थापित करेगा

प्रिय युवा हृदयों को हार्दिक बधाई!

इस्राएल के लोग परमेश्वर के अपने लोग हैं। उन्होंने उन्हें ''मेरे लोग'' कह कर बुलाया। लेकिन जब भी वे पापों में गिरे, उन्होंने लोगों को शत्रु राजा का इस्तेमाल करके सबक सिखाया। इसी तरह, उन्होंने अश्शूर के राजा को सिंहासन पर बैठाया और न्याय स्थापित किया। उन्होंने अश्शूर जाति को कई जातियों को लूटने व बंदी बनाने की अनुमति दी और उन्हें कई बार इस्राएलियों से लूट करने तथा बंदी बनाने दिया।

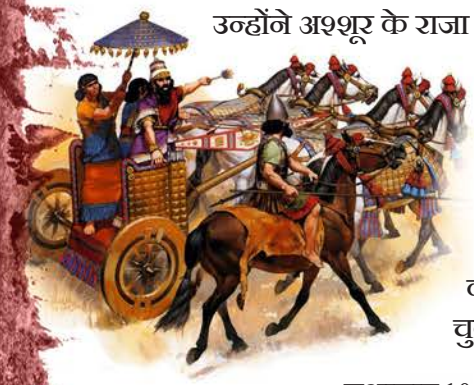

लेकिन अश्शूर का राजा अपनी ताकत व अपनी सेना की शक्ति के बारे में ऐसी डींग हांकने लगा कि वह परमेश्वर की स्तुति करना भूल गया। इसलिए, अश्शूर को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने वाले परमेश्वर ने कहा कि वह उन्हें उनके अभिमान का पलटा चुकाएगा और उन्हें उचित दंड दिया।

यशायाह 10:5-18 के पदों में, परमेश्वर अश्शूर के लोगों पर अपना न्याय लाए और उन सभी चीजों को नाश कर दिया जिन पर लोगों को अभिमान था। परमेश्वर ने कहा, ''मैं अपना न्याय उन्हें इस रीति सुनाऊंगा कि जो लोग बचे हैं वे जंगल की आग से बचे पेड़ों की संख्या के बराबर होंगे। वे इतने कम होंगे कि एक बच्चा उन्हें गिन सकता है।''

परमेश्वर ने हमारे देश के शासकों को एक पद पर रखा है और वह उन से यह आशा करते हैं कि वे न्याय और ईमानदारी से शासन करेंगे। अगर उनमें से कुछ अपनी शक्ति पर अभिमान करते हैं और गरीबों का शोषण करते हैं, तो परमेश्वर उन पर भी अपना न्याय भेजेंगे। जब भी सत्ता में बैठे लोग इसका दुरुपयोग करेंगे, यहोवा गमोलाह उनके कुकर्मों को उन्हें लौटा देंगे और न्याय स्थापित करेंगे।

आपके पास एक परमेश्वर हैं जो आपकी सुन रहे हैं, वे आपको न्याय देंगे! परमेश्वर निश्चित रूप से हस्तक्षेप करेंगे तथा न्याय स्थापित करेंगे!

मसीह की सेवा में
अवनिाश

Heart Beat

जब मैं बच्चा था तब मैं गुस्सैल स्वभाव का हुआ करता था। आखिरकार, यह मेरे चरित्र का लक्षण बन गया। मैं कोशिश करने पर भी अपने गुस्से को नियंत्रित नहीं कर पाता था और मैं अपने आसपास के लोगों को डांटता था। कभी-कभी मैं उन्हें पीट भी देता था। यह वर्षों से चल रहा है और जब भी मैं अपने गुस्से को नियंत्रित करने की कोशिश करता हूं, तो मुझे बहुत बुरा सिरदर्द होने लगता है। मुझे नहीं पता क्या करना है। और अब मेरा एक बेटा भी है और वह भी मेरी ही तरह गुस्सैल होता जा रहा है। उसे मेरे लक्षणों में बढ़ते हुए देखना दिल दहला देने वाला है, जिनसे मैं छुटकारा पाने की बहुत कोशिश कर रहा हूं। अब मेरे पास एकमात्र आशा परमेश्वर ही हैं और मैं कुछ समय से उसके लिए उपवास व प्रार्थना कर रहा हूं। क्या मुझे इससे छुटकारा मिल सकता है? कृपया मुझे सामान्य जीवन जीने में मदद करें। - राहुल, कुंबकोणम

प्रिय राहुल भाई ! मैं आपकी समस्या को समझता हूं। आपके गुस्से का असर सिर्फ आप पर ही नहीं बल्कि आपके बेटे सहित आपके आसपास के लोगों पर भी पड़ रहा है। और मैं समझता हूँ कि यह आपको बहुत परेशान कर रहा है।

राहुल, यह गुस्सा एक भावना है। यह आपके भीतर चल रहे संघर्ष को दिखलाता है। तो चलिए अब उस समस्या पर ध्यान देते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि एक दोस्त जिससे आप बहुत प्यार करते हैं, सबके सामने आपका अपमान कर रहा है। आप अपना गुस्सा जाहिर करेंगे। लेकिन वास्तव में आप आंतरिक रूप से जो अनुभव कर रहे होंगे वह विश्वासघात या ठेस होगी। और उस ठेस को व्यक्त करने के बजाय, आप क्रोधित हो जाते हैं और आहत शब्दों या कार्यों को दिखाते हैं। राहुल, आप इस चिड़चिड़ेपन से चंगे हो सकते हैं। आप भी इससे मुक्त हो सकते हैं। आपको इस काम को आसान बनाने के लिए बस कुछ दिशानिर्देशों का पालन करना होगा। निराश मत होइए।

सबसे पहले, उन स्थितियों के बारे में सोचें जिनसे आपको गुस्सा आता है।

- कुछ लोग अपना घर साफ-सुथरा न रखे जाने पर गुस्सा हो जाते हैं।
- जब कोई आपको कम बताता है
- जब कोई आपको उस गलती के लिए दोषी ठहराता है जो आपने नहीं की।
- जब कोई व्यक्ति वह काम नहीं करता है जिसके लिए उसे कहा गया था।
- जब अन्य लोग जोर से बोलते हैं तो कुछ लोग नफरत करते हैं।
- कुछ लोग किसी व्यक्ति के द्वारा हमेशा चीजों के बारे में शिकायत किए जाने से नफरत करते हैं

- जब कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है।
- जब लोग आप पर विश्वास नहीं करते हैं।
- जब कोई आपसे सवाल करता रहे।

ऐसी कई बातें हैं जो लोगों को गुस्सा दिला सकती हैं। आपको गुस्सा कब आता है? क्यों? इसके बारे में सोचें और इसे कागज़ पर लिख लें। यह भी लिखिए कि आप अपने गुस्से को कहाँ नियंत्रित कर सकते हैं और कब आप नियंत्रण खो देते हैं।

मैं आपको क्रोधित होने के बुरे परिणाम भी बताना चाहता हूं

- आपका शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित होगा। (जैसे आपका रक्तचाप, पाचन प्रणाली, दिल के काम आदि..)
- आपके लोग आपसे डरेंगे और दूरी बनाए रखना शुरू कर देंगे।
- आपका परिवार प्रभावित होगा। क्योंकि वे आपसे जिस प्यार के हकदार हैं, वह प्यार दिया या व्यक्त नहीं किया गया है, यह उनके दिलों में एक तरह की नफरत व डर पैदा करेगा और यह उन्हें आपको छोड़ने के लिए भी प्रेरित कर सकता है।

अपने गुस्से को काबू में रखने के लिए आप ये काम कर सकते हैं

1. कसरत:

जब आप शारीरिक रूप से सक्रिय रहते हैं तो आपका शरीर कुछ ऐसे हार्मोन निकालता है जो आपको खुश व तनावमुक्त बनाएंगे। जब आप एक दिन में कम से कम 30 मिनट के लिए व्यायाम करते या पैदल चलते या दौड़ते हैं, यह आपके क्रोध की समस्याओं को नियंत्रण में रखेगा।

2. विश्राम

जब आप बाहर प्रकृति में जाते हैं और हरे पेड़-पौधों का आनंद लेते हैं, तो यह आप में शांति की भावना पैदा करता है। इसलिए जब भी आपको गुस्सा आए तो उस जगह से बाहर निकलने की कोशिश करें और किसी शांत व आरामदायक जगह पर जाएं। इससे आपको मौके पर ही क्रोधित होने के बजाय सोच समझकर बर्ताव करने के लिए कुछ समय मिल जाएगा।

3. आत्म-जागरूकता

आप जो कुछ भी करते हैं उसके विषय में जागरूक होने से आपको अपने गुस्से को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी: जागरूक होने का अर्थ है कि परिस्थितियों का सामना करते समय आप क्या सोचते हैं और कैसे पेश आते हैं, इसके बारे में सावधान रहना।

गुस्सा आने पर किन बातों से बचना चाहिए

फोन कॉल, लोग, काम। इन चीजों से बचने से आपको स्थिति से परिचित होने में मदद मिलेगी। और वह जागरूकता आपके गुस्से को नियंत्रित करने में आपकी सहायता कर सकती है।

राहुल! जब आप ऐसी बातों का पालन करते हैं, तो यह आपको अपने क्रोध को बुद्धिमानी से काबू करने में मदद करेगा और आपका स्वास्थ्य सुरक्षित रह सकता है, आप अपने आप में बदलाव देख सकते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आप अपने बेटे में बदलाव देख सकते हैं। आप उसे कुछ ऐसा नहीं सिखा सकते जिसका आप खुद अनुसरण नहीं कर पाते।

इसलिए, मैं आपसे अपने गुस्से को नियंत्रण में रखने के लिए इन दिशानिर्देशों का पालन करने का आग्रह करता हूं। और साथ ही, जब आप विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं, तो वह अनुत्तरित नहीं होगी। परमेश्वर निश्चित रूप से आपके लिए चमत्कार करेंगे!

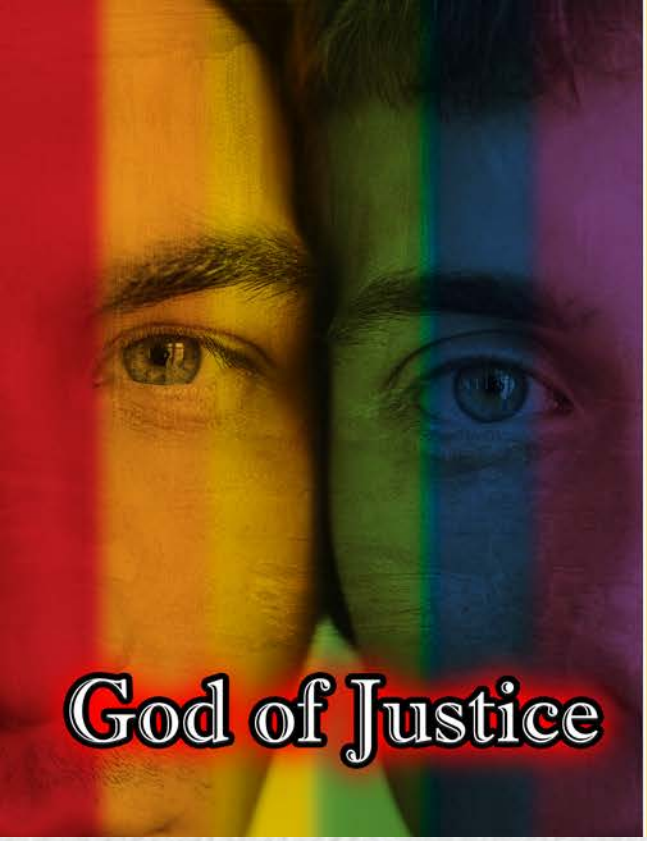

God of Justice

इस विशाल संसार में करोड़ों लोग रहते हैं। किसी ऐसे की बात कर पाना कठिन बात है जिसने उनके बीच रहते कभी कोई गलती न की हो। लेकिन जो व्यक्ति अपनी गलती पर पछताता है उसे प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त होता है। साथ ही पाप करने वाले व्यक्ति के जीवन में परमेश्वर की धार्मिकता भी दिखाई देती है। "धर्मी" शब्द का अर्थ है एक शिष्टाचार का पालन करना।

सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि जो व्यक्ति पाप नहीं करता वह धर्मी कहलाता है। जो आदमी सही और गलत में फर्क कर सकता है, उसका मतलब यह नहीं हैं कि वह सब कुछ सही करता है। पाप सदा उसके भीतर रहता है। क्योंकि ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसने कभी पाप न किया हो, बाइबल कहती है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं; सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए; कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों 3:9,10)

दाऊद ने जो प्रभु के हृदय को प्रिय था, राजा बनने के बाद, एक महिला को अपने महल की छत से देखा, उसे लाने के लिए दूत भेजे और उसके साथ पाप किया। अपने पाप को छिपाने के लिए, दाऊद ने सैन्य कार्यवाही से ऊरिय्याह को बुलाया और उसे अपने घर जाने के लिए कहा। परन्तु ऊरिय्याह महल में सो गया। तब दाऊद ने कठोर मन से, ऊरिय्याह को सैनिक कार्यवाही में वापस भेज दिया, उसे आगे के मोर्चे में खड़ा कर दिया जहां भयंकर युद्ध चल रहा था और दूसरों को अचानक वापस ले लिया, जिससे ऊरिय्याह घायल हो गया और मर गया। इस प्रकार दाऊद ने एक दुर्घटना की तरह एक सुनियोजित हत्या की योजना बनाई। ऊरिय्याह की मृत्यु के बाद दाऊद ने उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया। हालाँकि दाऊद इसे लोगों की नजरों से छिपाने में सक्षम था, लेकिन वह इसे प्रभु से नहीं छिपा सका। "परन्तु जो काम दाऊद ने किया था, उससे प्रभु अप्रसन्न हुआ।" (2 शमूएल 11:26)

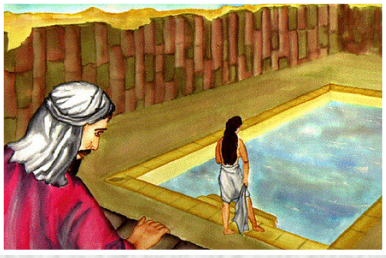

क्या दाऊद को वेश्यावृत्ति व हत्या के अपराध के लिए धर्मी परमेश्वर से दण्ड मिला? या दया के परमेश्वर ने उसकी क्षमा याचना सुनकर उसे माफ कर दिया? पुराने

नियम के अनुसार, हत्यारे को मौत की सजा दी जानी है। वही न्याय है। परन्तु जब परमेश्वर ने नातान के द्वारा दाऊद को उसके पाप का बोध कराया तो उसने कहा, "मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है" और प्रभु से क्षमा मांगनी चाही। प्रभु ने उसके मृत्युदंड को रोक दया और उसे आजीवन कारावास की सजा दी। क्या आप मौत की सजा और आजीवन कारावास के बारे में सोच रहे हैं? जब दाऊद पछताया तो नातान ने कहा, "यहोवा ने तुम्हारा पाप दूर कर दिया है। तुम मरने वाले नहीं हो"। (2शमूएल 12:13) यदि दाऊद ने अपने पाप के लिए पश्चाताप न किया होता, तो ऊरिय्याह की हत्या करने के कारण उसे प्रभु ने मार डाला होता। जब से उसने पश्चाताप किया, परमेश्वर ने उसे मृत्यु से बचा लिया लेकिन उसकी तलवार उसके परिवार की ओर कर दी। वह तलवार जो कभी उसके घर को नहीं छोड़ेगी वह है आजीवन कारावास। हम दाऊद के जीवन में इस सजा को पूरा होते हुए देख सकते हैं। जैसे परमेश्वर ने कहा, दाऊद के परिवार में प्रभु की तलवार काम करने लगी। उसके बच्चों के बीच लड़ाई छिड़ गई। दाऊद का अपना पुत्र उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और दाऊद के राजा होने के बावजूद उसे महल से बाहर निकाल दिया गया। आज भी कई युवा गलत तरीके से मानते हैं कि दया के परमेश्वर उन्हें उनके पापों के लिए क्षमा करेंगे और मुक्त कर देंगे और इसलिए वे निडर होकर पाप करते हैं। दाऊद को परमेश्वर की उपेक्षा करने के लिए दंडित किया गया था, हालांकि उसे कई बार उसके पाप के बारे में चेतावनी दी गई थी। परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करते हैं और दया दिखाते हैं, लेकिन साथ ही हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह हमें हमारे पापों की सजा देते हैं और हमें धर्मी ठहराते हैं। क्या आप उन लोगों के अपमानजनक शब्दों से चिंतित हैं जो आपके द्वारा एक पवित्र व ईमानदार जीवन जीए जाने बर भी आपकी पीड़ा, दुख, शर्मिंदगी का कारण बनते हैं? चिंता मत करें। दाऊद के जीवन में शिमी ने श्राप दिया था, शिमी ने कहा, "दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा!" (2 शमूएल 16:7) उसने दाऊद और उसके सेवक पर पत्थर फेंके। अबीशै जो क्रोधित हो गया था, उसने कहा, "यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों श्राप दे? मुझे जाने दे और उसका सिर काटने दे।" (2 शमूएल 16:9)। क्या आप जानते हैं दाऊद ने क्या कहा? "उसे श्राप देने दे, क्योंकि यहोवा ने उस से कहा है। हो सकता है कि यहोवा मेरी दुर्दशा पर दृष्टि करे, और अपनी वाचा की आशीष को आज के श्राप के बदले मुझे लौटा दे।" (2 शमूएल 16:11,12) परमेश्वर ने दाऊद के धीरज और उसके द्वारा कहे गए वचनों का सम्मान किया। जैसा दाऊद ने कहा था, जब वह राजा के रूप में लौट आया, तो शिमी ने कहा, "मेरा प्रभु मुझे दोषी न ठहराए। यह स्मरण न रख कि जिस दिन मेरे प्रभु राजा ने यरूशलेम को छोड़ा था, उस दिन तेरे दास ने क्या गलत किया था। राजा इसे अपने दिमाग से निकाल दे।" इसी तरह जब आप धैर्य रखते हैं और भरोसा करते हैं कि परमेश्वर धर्मी है, ठीक उसी तरह जैसे शिमी ने दाऊद को श्राप दिया था, लेकिन बाद में उसके सामने दीन हो गया था, यह पद पूरा होता है "क्योंकि यहोवा बदला लेने वाला परमेश्वर है, वह पूरा चुकाएगा।" (यिर्मयाह 51:56)

मेरे प्यारे युवाओ! पाप न करने को सावधान रहो। यह मत भूलो कि हम जो भी पाप करेंगे उसके लिए हमें सजा दी जाएगा। साथ ही यह चिंता न करें कि आपके लिए लड़ने, आपके लिए मध्यस्थता करने तथा आपके लिए न्याय करने के लिए आपके पास कोई नहीं है। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि "धार्मिकता का परमेश्वर" निश्चित रूप से आपके लिए यह करेगा!

एक नया दिल!

दिल की सर्जरी डर का विषय है। यदि हाथ या पैर की सर्जरी हो तो हममें थोड़ी हिम्मत हो सकती है। दिल की सर्जरी? कई बार? क्या उन्होंने जन्म के तीन महीने के भीतर दिल की सर्जरी की? मेरे मन में इस तरह के सवाल आते रहे। मैं अपनी सहेली ब्रेस द्वारा सामना की गई चुनौतियों व चमत्कारों को साझा कर रही हूं। ये मेरी मलेशिया की दोस्त ब्रेस के साथ हुई बातचीत है जिसे आप सभी के साथ साझा कर रही हूं।

क्या तुम अपने बचपन के बारे में साझा कर सकती हो?

नमस्ते जिश्या, बहुत दिनों बाद तुमसे फोन पर बात करके मुझे खुशी हो रही है। मेरा जन्म मलेशिया में हुआ था और मेरा एक बड़ा भाई है। जब तक मैं पैदा नहीं हुई थी, मेरे माता-पिता दोनों काम कर रहे थे। मेरे जन्म के बाद मेरी माँ को मेरी देखभाल करनी थी और इसलिए उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी। मेरा बचपन दूसरों जैसा नहीं था क्योंकि मेरे जन्म के कुछ ही हफ्तों के भीतर डॉक्टरों ने कहा था कि मेरा दिल ठीक से काम नहीं कर रहा है।

तुम्हारे दिल में क्या समस्या थी?

मेरे जन्म के तीसरे सप्ताह में, जिन डॉक्टरों ने मेरा परीक्षण किया, उन्होंने मुझमें एक जटिल हृदय स्थिति को पहचाना, जिसमें दाई ओर की धमनी बाई ओर तथा बाई ओर की धमनी दाई ओर थी। इसलिए, रक्त प्रवाह भी उल्टा था और इसलिए यह उस तरह से काम नहीं कर रहा था जैसा इसे करना चाहिए। इसमें सबसे बड़ा चमत्कार यह है कि डॉक्टर असमंजस में थे कि मैं अपने जन्म के तीन सप्ताह बाद कैसे जीवित रही। मेरी कई सर्जरी हुई थीं और कई दिनों तक मैं अस्पताल में रही।

तुम्हारे जन्म के तीन सप्ताह के भीतर सर्जरी? मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकती! उसके बाद क्या तुम्हारे शरीर में कोई समस्या थी?

जब मैं 10 साल की थी, एक गतिनिर्धारक (पेसमेकर) लगाया गया था और पिछले 20 सालों से मैं केवल गतिनिर्धारक (पेसमेकर) के साथ जीवित हूँ। उन दिनों मलेशिया में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी जहां हम इस तरह की सर्जरी के लिए रुक पाते। इसलिए, तीन सप्ताह से लेकर जब तक मैं डेढ वर्ष की हुई, मुझे अस्पताल में रखा गया और उसके बाद ही उन्होंने ओपन-हार्ट सर्जरी की। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कुआला लंपुर में मेरी पहली जटिल दिल की सर्जरी थी। डॉक्टरों ने अनुमान लगाया कि मेरे बचने की संभावना केवल 10% है और अगर मैं बच भी गई तो मैं चल नहीं पाऊंगी और मेरा शरीर गतिहीन रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि यदि मैं बच गई, मेरे मस्तिष्क में ऑक्सीजन की आपूर्ति कम हो जाएगी, क्योंकि मेरा दिल कमजोर है, जिससे मुझे पढ़ाई करने में कठिनाई होगी और इस तरह की और जानकारी मेरे बारे में बताई गई। फिर से, मेरा दिल ने ठीक से काम नहीं किया और एक गतिनिर्धारक यंत्र लगाया गया था। संक्षेप में कहें तो मेरा पूरा बचपन अस्पताल और डॉक्टरों के बीच बीता।

मेरे लिए यह सुनना भी इतना कठिन है। तुमने अपने शरीर में इतने दुख सहे लेकिन तुम भावनात्मक रूप से कैसी थी?

मैं अन्य बच्चों की तरह खेल या दौड़ नहीं सकती थी लेकिन मैं जो कुछ भी कर सकती थी, मैंने वह सब किया। जब मैं उदास महसूस करती, तो मेरी माँ परमेश्वर के वचन को साझा करती और मुझे प्रोत्साहित करती। मैं ही क्यों? यह मेरे साथ क्या हो रहा है? मैं अस्पताल में क्यों हूँ? जब इस तरह के सभी सवाल उठते, तो मेरी माँ तुरंत मुझे उत्साहजनक वचन

कहती। मैं आत्म-दया में नहीं गई लेकिन मैं जो कुछ भी कर सकती थी, मैंने अपनी पूरी ताकत से इसे अच्छा ही किया। मैं शारीरिक व्यायाम नहीं कर सकती थी और न ही लंबी पैदल यात्रा कर सकती थी, यह संभव नहीं था। इन विचारों ने मुझे बोझिल महसूस कराया लेकिन मैं उन सभी चीजों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करती हूं जो मैं करने में सक्षम थी।

यदि तुम इतनी निडरता से बोल पा रही हो, तो मुझे लगता है कि यह तुम्हारी माँ की प्रार्थना और प्रोत्साहन है जिसने तुम्हें मजबूत बनाया है। क्या अपनी माँ के बारे में साझा कर सकती हो?

मेरी माँ एक प्रार्थना योद्धा हैं। कभी-कभी जब मुझे अस्पताल में भर्ती कराया जाता था, तो वह दूसरों को बताती थी कि यीशु अच्छे हैं। एक बार मेरी दिल की सर्जरी से पहले मैंने अपनी माँ से पूछा, "यदि इस दिल की सर्जरी में मेरी मृत्यु हो जाती है तो क्या आप तब भी कहेंगी कि यीशु अच्छा है?"। उन्होंने कहा कि यदि उन्हें मुझे खोने भी पड़ा तब भी परमेश्वर का चरित्र कभी नहीं बदलता। वह एक अच्छे परमेश्वर हैं। परमेश्वर पर यह भरोसा, सभी परिस्थितियों में मेरी माँ का विश्वास ही मुझे मजबूत करता था। जब मैं सर्जरी के बाद होश में आई, तो मैंने अपनी माँ को यह कहते हुए सुना, "माँ तुमसे प्यार करती है, पिता जी तुमसे प्यार करते हैं, यीशु तुमसे प्यार करते हैं।" यह सच है कि मेरी मुझे पूरी होश नहीं होगी, और न ही मैं बोल सकती थी लेकिन वे जो कहते थे, मैं उसे महसूस कर सकती थी। मेरे परिवार एक बड़ा सहारा था। मैं यीशु के प्रेम को और अधिक समझ पाई।

तुम्हारे पिता जी, माँ और बड़े भाई को बहुत-बहुत सलाम। तुमने मुझे रुला दिया। अच्छा, क्या तुम पढ़ाई कर पाई?

अन्य छात्रों की तरह मैंने भी स्कूल और कॉलेज में पढ़ाई की और अच्छे अंक प्राप्त किए। परमेश्वर ने मुझे अच्छे दोस्त दिए। कुछ मेरी कमजोरी की वजह से मुझसे दूर रहे हैं तो कुछ ने मुझे ठेस भी पहुँचाई है। लेकिन मेरी माँ कहती थी, "तुम्हें प्यार करने वाले बहुत हैं, उनसे दोस्ती करो।" जब मैं परमेश्वर से अपने भविष्य के बारे में पूछती हूं या जब मैं उनके सामने अपने हृदय को उण्डेल कर रोती हूं, वह मुझे यह कहकर प्रोत्साहित करते हैं, "मेरे पास तुम्हारे लिए सबसे अच्छी योजना है।"

तुम इतनी खुश कैसे हो? क्या तुम अपने जीवन के न भुला पाने वाले पल के बारे में साझा कर सकती हो?

मैंने यह सीखना जारी रखा है कि परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा कैसे किया जाए। न भुला पाने वाले पल... हां, तुम्हें बताती हूं। जब मैं 18 साल की थी, मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और कुछ सपनों के साथ प्रतीक्षा में थी। अचानक मैं बीमार पड़ गई और मुझे अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर ने कहा कि मेरे गतिनिर्धारक यंत्र की बैटरी क्षतिग्रस्त हो गई थी, और इसे बदलने के लिए मेरी एक सर्जरी हुई। जब मैं एक बच्चा थी, मेरे लिए सर्जरी कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन एक किशोर होने के नाते, मुझे यह बहुत मुश्किल लगी। फिर भी परमेश्वर ने मुझे मजबूत किया। इस साल भी मेरी एक सर्जरी हुई थी। अपने प्रभु के लिए चलने से मुझे कोई रोक नहीं सकता था।

बढ़िया ग्रेस! वह सभी कौनसे काम हैं जो तुम अभी करती हो?

मैं मलेशिया की एक प्रसिद्ध कलीसिया में युवाओं, बच्चों और जवानों के बीच सेवा कर रही हूँ। मैं सोशल मीडिया के जरिए भी परमेश्वर का प्रेम साझा करती हूं। विशेष रूप से, मैं परमेश्वर के प्रेम को अपनी गवाही के माध्यम से मेरे जैसे कमजोर बच्चों के माता-पिता और अस्पतालों में भर्ती मरीजों के साथ साझा करती हूं।

बढ़िया... तुम इस लेख को पढ़नेवालों से क्या कहना चाहोगी?

ऐसा मत सोचें या बड़बड़ा कर न कहे कि केवल आप ही जीवन में दुख उठा रहे हैं। इसके बजाय, उन भले कामों के बारे में सोचें जो परमेश्वर ने आपके जीवन में किए है और उन्हें धन्यवाद दें। आप जो कुछ भी कर सकते हैं उसमें परमेश्वर के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ करें और यह न भूलें कि परमेश्वर भले हैं।

दुख, कमजोरियां, मौत की अंधेरी घाटियां ग्रेस की दौड़ को रोक नहीं सकीं। वह आज भी प्रभु की दौड़ में दौड़ रही है। यह न भूलें कि ग्रेस जेराल्ड का नेतृत्व करने वाले प्रभु अंत तक आपका मार्गदर्शन करेंगे

परमेश्वर जिसने अब्राहम को बुलाया

जब परमेश्वर ने अब्राहम को उसके लोगों को छोड़ने और उस देश की यात्रा करने के लिए कहा, जिसका उन्होंने वादा किया था, "अब्राहम चला गया, जैसा कि प्रभु ने उससे कहा था।" (उत्पत्ति 12:4) परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया और बिना किसी प्रश्न के उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। अब्राहम में एक आज्ञाकारी हृदय देखा गया जो उसकी सभी विशेष आशीषों का कारण था। यहाँ तक कि जब इतने सारे राजा उसके विरुद्ध आए, तब भी कोई अब्राहम को नहीं जीत सका क्योंकि वह परमेश्वर की बुलाहट का आज्ञाकारी था।

"जब यीशु गलील की झील के किनारे चल रहा था, तो उसने दो भाइयों, शमौन उपनाम पतरस और उसके भाई अन्द्रियास को देखा, जो मछली पकड़ रहे थे। आओ, मेरे पीछे हो लो," यीशु ने कहा, "और मैं तुम्हें लोगों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।" तुरन्त वे जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।" (मत्ती 4:18-20) हालाँकि पेट भरने को उनका एक परिवार था, उनके पास नावें थीं, उनके पास एक सफल पेशा था, उनके पास जाल और जरूरतें थीं, फिर भी वे अपनी नावों को छोड़कर बिना किसी प्रश्न के यीशु के पीछे हो लिए।

"और वहाँ से आगे बढ़कर, उसने और दो भाइयों अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा। (मत्ती 4:21)

जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, तो उसने उस देश की समृद्धि की छानबीन नहीं की जहां उसे बुलाया गया था या यह नहीं पूछा कि यह उसके पारिवारिक जीवन के लिए कितना अनुकूल होगा। उसने अपनी सुरक्षा एवं बचाव के बारे में कभी नहीं सोचा। इसके बजाय, अब्राहम ने परमेश्वर की बुलाहट के प्रति निर्विवाद आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया।

वर्ष 1974 में, जब परमेश्वर ने मेरा अभिषेक किया, मुझे उनकी सेवकाई के लिए बुलाहट प्राप्त हुई। मैंने परमेश्वर के सामने ऐसे बहाने बनाए कि 'मैं परमेश्वर की सेवा अंशकालिक, रविवार को या सप्ताह के दिनों में नौकरी के बाद करूंगा।' परन्तु

लगातार, परमेश्वर ने मेरे साथ हस्तक्षेप किया। हालांकि, यह उच्च बुलाहट एक शक्तिशाली परमेश्वर से थी जिसने मुझ पर भरोसा किया, मैंने तुरंत उसकी बात नहीं मानी। मैं अपने निजी जीवन और भविष्य के बारे में बहुत सोच रहा था। 6 महीने के बाद, मेरा परमेश्वर के साथ सीधा सामना हुआ जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, "अपने आस-पास नाश हो रहे करोड़ों लोगों को देख, मैं तुम्हें इन लोगों के लिए बुला रहा हूं, लेकिन इसके बजाय तुम अपने, अपने करियर और परिवार के बारे में स्वकेंद्रित हो।" तुरंत, मैं रोया और खुद को उनकी सेवा के लिए समर्पित कर दिया। आज भी मन में इस बात का अफसोस है कि मैंने छह महीने तक परमेश्वर की बुलाहट में लापरवाही की और स्वकेंद्रित बहाने बनाकर इसमें देरी कर दी। हमसे विपरीत, अब्राहम ने तुरंत परमेश्वर की आज्ञा मानी। अपनी यात्रा में कहीं भी, उसे इस बात का संदेह नहीं था, "लोग क्या कहेंगे, कहाँ जाना है और क्या करना है?" उसने सिर्फ परमेश्वर के प्रति एक वफादार आज्ञाकारिता दिखाई।

हम बाइबल में ऐसा में पढ़ते हैं, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" (प्रेरितों के काम 1:8) परमेश्वर ने हम सभी को नौकरी छोड़ने, अपने परिवारों को त्यागने और फिर परमेश्वर की सेवकाई में शामिल होने के लिए नहीं कहा है। सबसे पहले हमें उन जगहों पर गवाह होने के लिए कहा गया है जहां हम रहते हैं - मुख्य तौर से हमारे घरों व कार्य-स्थानों में। हम में से कितने लोग अपनी विशेष बुलाहट को समझने में सक्षम हैं? क्या हमें लगता है कि केवल पूर्ण-कालिक पादरियों, प्रचारकों और मिशनरियों के पास ही बुलाहट है? चाहे एक छात्र हो या एक घर निर्माता या एक व्यवसायी व्यक्ति, हमें हर जगह जहां हमें रखा गया है परमेश्वर की महिमा को प्रकट करने के लिए बुलाया गया है। अगर हमें लगता है कि हमें अपनी वर्तमान स्थिति को छोड़कर परमेश्वर की सेवकाई के लिए कहीं जाना है तो हम गलत हैं। परमेश्वर ने आपको अपने परिवार के निर्माण के लिए बुलाया है- क्या आप उस विशिष्ट बुलाहट के लिए प्रतिबद्ध हैं? यदि आप अपने ससुराल और जीवनसाथी के साथ होने वाले झगड़ों के कारण अपने परिवार से बचकर दूर भागना चाहते हैं, तो इसका मतलब है कि आप परमेश्वर की बुलाहट के प्रति आज्ञाकारी नहीं है और आप अपने उद्देश्य से भटक रहे हैं। परिवार में समस्याएँ और विवाद होते हैं। इस बीच, हमें परमेश्वर के गवाह के रूप में दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए जो कि आपकी बुलाहट है। यहां तक कि अपने कार्यस्थल में भी, हमें एक विशेष तरीके से काम करने के लिए बुलाया गया है, जो दूसरों से अलग है और परमेश्वर को प्रकट करता है। हमें अपने नौकरी पेशे में निर्दोष एवं दोषरहित होने के लिए बुलाया गया है, यूसुफ और दानियल के उदाहरणों पर चलते हुए। यही हमारे लिए विशेष बुलाहट है! तभी हम अब्राहम की तरह विजयी हो सकते हैं।

मेरे प्यारे जवानो, केवल इसलिए कि अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और ईमानदारी से अपने आप को परमेश्वर के प्रति समर्पित कर दिया, कोई भी उसे हरा नहीं सका। परमेश्वर उसके साथ खड़े हुए और उन्होंने विभिन्न जातियों के राजाओं को उसके सामने झुकाया। इसलिए, मैं आप में से प्रत्येक से आग्रह करता हूं कि आप खुद को परमेश्वर की बुलाहट के प्रति समर्पित कर दें। सुनें कि परमेश्वर आपसे क्या बातचीत कर रहे हैं। अपनी शिक्षा, पेशे और अपने जीवन के हर छोटे विवरण में आज खुद को उनकी उच्च बुलाहट को सौंप दें। परमेश्वर आपको भी विजयी बनायेंगे!

मैं सुसमाचार से नहीं लजाता !

सुसमाचार का प्रचार करते समय, बहुत से लोग व्यावहारिक समस्याएँ उत्पन्न करने के लिए प्रश्न पूछेंगे। पिछले महीने, हमने देखा कि हमें ऐसे नाजुक प्रश्नों का उत्तर कैसे देना चाहिए और सुसमाचार फैलाने के अपने मिशन को कैसे जारी रखना चाहिए। इस महीने भी हम यह देखना जारी रखेंगे कि इन सवालों का सामना कैसे किया जाए।

1. सभी धर्मों के प्रति सहनशील

अपनी आत्मा जीतने वाली सुसमाचार यात्रा में हम जिन लोगों से मिलते हैं वे अजीब लोग हैं। एक दुष्ट व्यक्ति को परमेश्वर की ओर मोड़ना आसान है। लेकिन सभी धर्मों को मानने वालों को परमेश्वर की ओर मोड़ना मुश्किल है। हमें इन लोगों के लिए और प्रार्थना करनी होगी। उन्हें अपने निजी जीवन में बड़ी समस्याएं हैं। वे बिना किसी सहायता व उद्धार के संकटपूर्ण परिस्थितियों में फंसे हुए हैं।

उनके लिए हमारा जवाब क्या होना चाहिए?

ऐसे लोगों की सेवा करने के लिए, हमें पवित्र आत्मा से समझ का एवं प्रकाशन का दान देने के लिए मांगना चाहिए।

हमें उनसे बहस नहीं करनी चाहिए। हमें पवित्र आत्मा की मदद से उनके भीतरी मनुष्य की जरूरतों की पहचानना चाहिए, इसे उनके आगे प्रकट करना चाहिए और सुसमाचार साझा करना चाहिए तब वे परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे।

2. स्वर्ग जाने के कई रास्ते हैं

अपनी सेवकाई में हम जिन लोगों को ऐसी बातें करते हूए पाते हैं कि वे उच्च शिक्षित होंगे और उन्हें बड़ा ज्ञान होगा। वे कई धर्मों के सिद्धांतों और शास्त्रों से अच्छी तरह परिचित हैं। इसलिए वे कहेंगे कि स्वर्ग जाने के बहुत से मार्ग हैं, और उन में से एक मार्ग यीशु के माध्यम से है। वे हमें अन्य विचारधारा बताएंगे कि नदियाँ बहुत हैं लेकिन वे सभी समुद्र में मिलती हैं। इसी तरह, धर्म कई हैं लेकिन वे सभी मनुष्य को स्वर्ग की ओर ले जाते हैं।

उनके लिए हमारा जवाब क्या होना चाहिए?

"यीशु: मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" (यूहन्ना 14:6) यीशु ही एक सच्चे परमेश्वर व अनन्त जीवन हैं। हमें कहना चाहिए कि यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता हैं जो मनुष्य को बचा सकते हैं।

"और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों के काम 4:12)

इस पद को जोर देकर बोलें। तब वे पश्चाताप करेंगे।

हमें इन लोगों के लिए उपवास व प्रार्थना करनी चाहिए। क्योंकि, जैसे विश्वास परमेश्वर की आत्मा है, वैसे ही अविश्वास शैतान की आत्मा है।

इसलिए, यदि हम उपवास व प्रार्थना के साथ उनका सामना करते हैं, तो वे पश्चाताप करेंगे।

प्रिय युवाओं! पवित्र आत्मा को अपने साथ रहने दें और विरोध करने वालों या ज्यादा बोलने वालों के पश्चाताप के लिए अनुग्रह से आपकी अगुआई करने दें। इसलिए, निराश न हों, साहस से सुसमाचार का प्रचार करें। हमें स्वर्ग में पुरस्कृत किया जाएगा। अगले महीने के प्रकाशन में फिर भेंट होगी

यीशु के दूसरे आगमन की तैयारी करें

यरूशलेम में मंदिर का पुनर्निर्माण

यरूशलेम को इब्रानी भाषा में "येरुशलयिम" कहा जाता है जिसका अर्थ है "शांति की नींव"। इस शहर का कुल क्षेत्रफल 125 वर्ग किमी है। और वहां 8 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं। यह सबसे पुराने शहरों में से एक है और इसे यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम जैसी तीन वर्गों के लिए पवित्र शहर माना जाता है।

अब तक यरूशलेम को दो बार नष्ट, 23 बार घेरा, 52 बार इस पर हमला किया गया था, और 44 बार बाहरी लोगों द्वारा कब्जे में लिया गया था। प्रभु के वादे के आधार पर: "उसने मुझसे कहा, 'तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आँगनों को बनाएगा ...'" (1इतिहास 28:6), यह मंदिर सुलैमान द्वारा बनाया गया था। लेकिन इस पहले मंदिर को 587 ई.पू. में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने जला दिया था, जब वह यरूशलेम से युद्ध करने को आया। 70 वर्षों के बाद एज्रा और नहेमायाह जैसे लोगों के द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। भविष्य के दिनों में राजा हेरोदेस द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया था। चेले यीशु को इस मंदिर की संरचना दिखाने आए थे। और यीशु ने उन से कहा, उसने उनसे कहा, "क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।" (मत्ती 24:2)। जैसा कि यीशु ने कहा था, 70 ईस्वी के दौरान, रोमी सेना ने यरूशलेम शहर और मंदिर को जला दिया था। आग की वजह से मंदिर को ढकने वाली सोने की प्लेटें पिघल गई और पत्थरों के बीच फंसी हुई लट्ठा बन गई। इस सोने को हटाने के लिए, रोमन सैनिकों ने मंदिर के प्रत्येक पत्थर को अलग कर दिया, इस प्रकार यीशु ने जो कहा वह पूरा हुआ। वचन के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह के आने से पहले नष्ट हुए मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाना चाहिए। वर्ष 2018 में, श्री ट्रम्प ने, जो पहले अमेरिका के राष्ट्रपति थे, यरुशलेम को इजराइल की राजधानी के रूप में घोषित किया था। इजराइल के पूर्व प्रधान मंत्री, बेंजामिन नेतन्याहू ने घोषणा की कि यरूशलेम के मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाएगा। "इंस्टीट्यूट टेंपल माउंट" नामक संस्था मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए एक डिजाइन के साथ तैयार है। "इसलिए यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।" (दानिय्येल 9:25) क्योंकि मसीह-विरोधी इजरायल के साथ एक इक़रार करेगा और इसे बीच में ही तोड़ देगा। तब वह जाकर मन्दिर में बैठेगा और खुद को परमेश्वर घोषित करेगा। मसीह-विरोधी का समर्थन करने वाले देश इजरायल के साथ एक समझौता करेंगे और उसका समर्थन करेंगे। इसके लिए अप्रत्यक्ष रूप से तैयारी हो रही है। यरूशलेम के मंदिर को मसीह-विरोधी के शासन से पहले फिर से बनाया जाएगा। प्रभु यीशु मसीह के आने से पहले मंदिर का पुनर्निर्माण एक महत्वपूर्ण संकेत है।

मेरे प्यारे नौजवानों, जैसा कि वचन यह प्रकट करता है कि प्रभु यीशु मसीह के आने से पहले पृथ्वी पर क्या होगा, यह अब हमारे चारों ओर बहुत तेजी से पूरा हो रहा है। एक तरफ यह दुनिया मसीह-विरोधी के शासन के लिए तैयार हो रही है लेकिन प्रभु का आगमन उससे पहले होगा। प्रभु के आने के लिए अपने आप को तैयार करें। "इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस समय के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी समय मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।" (मत्ती 24:44)

अगले लेख में आइए हम अपने प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बारे में एक और चिन्ह देखें।

अदोनी-बेजेक

जब यहोशू ने यहोवा से पूछा, कि पहले कनानियों के साथ कौन लड़े, तब यहोवा ने उत्तर दिया, कि यहूदा का गोत्र कनानियों से लड़ने को चढ़ाई करेगा, और वह उस देश को उनको सौंप देगा। तब यहूदा के लोगों ने शिमोनियों, अपने संगी इस्राएलियों को अपने साथ आने के लिए आमंत्रित किया कि वे कनानियों से लड़ने के लिए अपने निर्धारित क्षेत्र में जाएं और फिर वे शिमोनियों के क्षेत्र में चले जाएंगे। इसलिए शिमोनी

उनके साथ चले। जब यहूदा ने हमला किया, तब यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उनके हाथ में कर दिया, और उन्होंने बेजेक नाम स्थान में दस हजार पुरूषों को मार डाला। कनानियों और परिज्जियों पर उनकी जीत के बाद, कनानी राजा अदोनी-बेजेक बेजेक को भाग गया, लेकिन उन्होंने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया, उसके अंगूठे और पैर की बड़ी उंगलियों को काट दिया। तब अदोनी-बेजेक ने बड़ी पीड़ा के साथ कहा, "हाथ पाँव के अँगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरी मेज के नीचे टुकड़े बीनते थे; जैसा मैंने किया था, वैसा ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है।" तब वे उसे यरूशलेम को ले गए और वहाँ वह मर गया। (न्यायियों 1:1-7)

प्रिय युवाओं, हम अदोनी-बेज़ेक की कहानी से यह समझते हैं कि हमारा परमेश्वर 'प्रतिशोध का परमेश्वर' है। आइए हम यह कभी न भूलें कि एक दिन वह हमारे सभी पापों व गलतियों के लिए उचित दंड देंगे।

याकूब

एक दिन जब इसहाक का सबसे बड़ा पुत्र एसाव थका व भूखा जंगल से घर लौटा, तो उसका भाई याकूब एक स्वादिष्ट दाल बना रहा था। एसाव ने याकूब से उसे कुछ स्वादिष्ट लाल दाल देने को कहा। लेकिन याकूब ने उसे रोटी और कुछ दाल के बदले अपने पहिलौठे के अधिकार का सौदा करने के लिए कहा। एसाव मान गया और उसने याकूब को आपनी मीरास मात्र एक कटोरा दाल के लिए दे दी।

जब इसहाक बूढ़ा हो गया और उसकी आंखें बहुत कमजोर हो गई, तो उसने एसाव को बुलाया और अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह उसे पहिलौठे का आशीर्वाद दे। परन्तु रिबका ने धोखे से एसाव की बजाय छोटे पुत्र याकूब को उसके पिता का आशीर्वाद प्राप्त करने में सहायता की। जब एसाव ने यह सुना, तो उसने याकूब से बदला लेने और उसे मारने की योजना बनाई। इसलिए रिबका ने याकूब को अपने भाई लाबान के पास भेजा। वहाँ उसने लाबान की बेटी राहेल से शादी करने के लिए 7 साल तक उसकी सेवा की। परन्तु, राहेल की बजाय, लाबान ने लिआ को याकूब से ब्याह दिया, इस प्रकार विवाह के समय उसे धोखा दिया। फिर से, वह राहेल से शादी करने के लिए और 7 साल तक सेवा करने के लिए सहमत हुआ। (उत्पत्ति 25-29)।

प्रिय युवाओं, याकूब ने अपने ही भाई को दो बार धोखा दिया। लेकिन कुछ वर्षों के बाद, लाबान ने उसे धोखा दिया। इस कहानी से स्पष्ट है कि हमारे द्वारा किए गए पापों की सजा हमें अवश्य मिलेगी। इसलिए, किसी भी कारण से किसी को धोखा न दें और परमेश्वर की आशीषें प्राप्त करने के लिए भयपूर्वक परमेश्वर के मार्गों पर चलें।

यूसुफ

अपने भाई की नफरत के कारण वह मिद्यानियों के हाथ चान्दी के 20 शेकेल में बेच दिया गया। पोतीपर नाम के मिस्र के एक अधिकारी ने उसे मिद्यानियों से मोल ले लिया। उसने अपना सब कुछ यूसुफ को सौंप दिया और उसे न्यायी बना दिया। यूसुफ उस काम के लिए जेल गया जो उसने न किया था। जब वह बन्दीगृह में विश्वासयोग्य था, तब यहोवा ने उसे फिर उठाया। आनेवाले अकाल से बचने के लिये उसने सारे मिस्र देश पर यूसुफ को नियुक्त किया। जब सब देशों में अकाल पड़ा, तब यूसुफ के भाइयों ने मिस्र में यूसुफ के हाथ से अन्न मोल लिया। हालाँकि यूसुफ के भाइयों ने उसके साथ बुरे काम किए, अंत में फिर भी उसने उन बुरे कामों को भली बातें होते देखा। यूसुफ अपने भाइयों को हानि नहीं पहुँचाना चाहता था, भले ही उन्होंने बुरे काम किए थे। इसके बजाय, यह यूसुफ ही था जिसने उनका भला किया। परन्तु जब कभी यूसुफ के भाई उसे देखते, तो वे केवल उस अन्याय को देखते जो उन्होंने उसके साथ किया था। उसके भाइयों ने यूसुफ की ओर देखा और कहा, "हमें उस विश्वासघात के लिए क्षमा कर, जो हम ने किया।" यूसुफ ने यह नहीं कहा कि जिन लोगों ने उसके साथ बुराई की, वह उन्हें बदला देगा। बल्कि उसने उनका भला किया। (उत्पत्ति 39-50)

प्रिय युवाओं, यूसुफ से उसके भाई घृणा करते थे। परन्तु प्रभु यूसुफ के संग रहे, और उसके हित में सहायता की, क्योंकि उस ने भलाई की थी। उन्होंने उसी भाई के हाथों से भलाई प्राप्त की जिससे वे घृणा करते थे। जब आप बुराई का बदला भलाई से देंगे, तब प्रभु बुराई को सुधारेंगे!

शिमी

राजा दाऊद का अपना पुत्र अबशालोम उसका पीछा करता है और वह कहीं छिप जाता है। तब शिमी ने राजा दाऊद पर यह कहते हुए पत्थर फेंके, 'दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा! तू अपनी बुराई में आप फँस गया।' दाऊद चुपचाप चला गया। तब अबीशै ने राजा से कहा, 'यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों श्राप देने पाए? मुझे उधर जाकर उसका सिर काटने दे।" दाऊद ने अबीशै से कहा, "जब मेरा निज पुत्र ही मेरे

प्राण का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे? उसको रहने दो, और श्राप देने दो; क्योंकि यहोवा ने उससे कहा है। कदाचित् यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके आज के श्राप[a] के बदले मुझे भला बदला दे।" (2 शमूएल 16:5-12)। और ऐसा हुआ कि जब दाऊद सिंहासन पर लौट रहा था तब शिमी ने राजा दाऊद के सामने निकलकर उस की दोहाई दी, और क्षमा मांगी। (1शमूएल 19:5-19)

प्रिय युवाओं, शिमी दाऊद के विरुद्ध खड़ा हुआ, जिसने कोई अपराध नहीं किया था। लेकिन जब समय आया, तो उसने दुःख के बदले भलाई ही की। जब तुम भी दूसरों के द्वारा तिरस्कृत होने पर दाऊद की तरह शांत रहोगे, तो तुम भलाई प्राप्त करोगे।

सफलता की मधुर यात्रा!

सभी सफल युवाओं को हार्दिक बधाई! असफलताएं, परीक्षण, भय और रोग हमारे जीवन में अक्सर आते जाते हैं। लेकिन इन सबका डटकर सामना करने वाले ही विजयी होते हैं। जो उनसे डरते हैं वे जीवन में हारे हुए होते हैं। हम उत्कृष्टता के लिए पैदा हुए हैं। आपको बढ़ावा देने के लिए यहां एक सफल व्यक्ति की गवाही दी गई है।

थॉमस स्टीफन मोनाघन का जन्म 1937 में अमेरिका के मिशिगन राज्य के एन आर्बर में हुआ था। उनका परिवार धनी नहीं था और जब वह चार साल का था तब उनके पिता का निधन हो गया था। थॉमस की मां के लिए दो बेटों के साथ जीवन व्यतीत करना कठिन था। इसलिए उसकी माँ ने उसका और उसके भाई का एक अनाथालय में दाखिला करा दिया।

चूंकि उसने कम उम्र में अपने पिता को खो दिया था और अपनी मां से अलग हो गया था, इसलिए वह सात साल तक प्यार के लिए तरसता रहा। थॉमस हर दिन अनाथालय के प्रवेश द्वार पर इस उम्मीद में खड़ा रहता था कि उसकी माँ उसे लेने वापस आएगी। एक दिन उसकी माँ उसे और उसके भाई को वापस घर ले गई। थॉमस ने सोचा कि उसके आंसुओं के दिन खत्म हो गए हैं और वह एक खुशहाल जीवन जीने वाला है। लेकिन उनके परिवार की स्थिति ने ऐसा नहीं होने दिया। गरीबी ने उनके घर को अपने कब्जे में ले लिया और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए हर तरह के काम करने लगा। उसने सोना छोड़ दिया और दिन-रात कड़ी मेहनत की। उसकी शिक्षा व परिवार का खर्च उसे कुचलने लगा और एक समय के बाद, वह कॉलेज जारी नहीं रख पाया। उसने पढ़ाई छोड़ दी और उन अतिरिक्त घंटों के दौरान भी काम करना शुरू कर दिया।

थॉमस जीवित रहने के लिए अनियमित नौकरियां कर रहा था और तभी उसे अपने भाई से निमंत्रण मिला। मिशिगन के यिप्सिलंती में एक छोटे सी पिज्जा की दुकान के मालिक ने दुकान को बंद करने का फैसला किया क्योंकि वह इसे चलाने में सक्षम नहीं था। इन दोनों भाइयों ने इसे खरीदने की योजना बना ली। थॉमस ने शुरुआत के लिए अपनी सारी कमाई का निवेश कर डाला। उन्होंने 'डॉमिनिक' नामक दुकान को 900 डॉलर में खरीद लिया। लेकिन उनके भाई के पास व्यवसाय करने की इच्छा नहीं थी और उसने थॉमस से अनुरोध किया कि अपने भाई के दुकान चलाने के बदले में उसकी शुरुआती राशि लौटा दे।

उसके भाई के इस अनपेक्षित व्यवहार ने थॉमस को बिखेर दिया। उसे आशा करता था कि वह उसका स्तंभ बनेगा। थॉमस को नए ग्राहकों को दुकान में लाने, पुराने ग्राहकों को बनाए रखने जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उसने दुकान का नाम बदलकर डोमिनोज पिज्जा कर दिया। हालांकि नाम बदल दिया गया था, लेकिन उसकी आय में कोई बदलाव नहीं आया था। दुकान घाटे में चल रही थी। फिर उसने भोजन सूची से केक और सैंडविच हटा दिए क्योंकि वे ज्यादा बिकते नहीं थे। इसके बजाय, उसने पिज्जा की नई किस्मों को विकल्प सूची में डाला और व्यवसाय को विकसित करने पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित किया। उसने "होम डिलीवरी" विकल्प पेश किया

और इन उपायों से उसे ग्राहक मिलने लगे।

थॉमस ने पिज्जा को खराबी से बचाने के लिए विशेष गर्म डिब्बे तैयार किए। धीरे-धीरे पिज्जा का स्वाद और गुणवत्ता लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने लगी। उसी वर्ष, उन्होंने दो और पिज्जा की दुकानें खोलीं। डोमिनोज पिज्जा के प्रतीक चिह्न (logo) में तीन बिंदु होते हैं, जो उसके द्वारा खोली गई पहली तीन दुकानों को दर्शाता है। ये दुकानें अंततः इन ब्रांड की पहचान बन गई। लेकिन थॉमस की सफलता अधिक समय तक नहीं टिकी। उसकी पहली दुकान में आग लग गई और उसे भारी नुकसान हुआ।

थॉमस इस बाधा से रुका नहीं। इस एक की जगह उसने पांच नई दुकान खोली और उसका कारोबार बढ़ने लगा। कुछ समय बाद उसे प्रतिपुष्टि मिलने लगी कि पिज्जा की गुणवत्ता घट रही है। इससे बिक्री में भारी गिरावट आई है। थॉमस अपनी समस्याओं से बिखर नहीं गया और वह एक-एक करके उनका सामना करने लगा। एक गहन विचार के बाद, उसने '30 मिनट पिज्जा डिलीवरी' की शुरुआत की। उस दौरान वहाँ 200 दुकानें थीं। "पिज्जा पहुँचाने में देरी होने पर पिज्जा का शुल्क नहीं होगा" ने सभी को आकर्षित करना शुरू कर दिया और उसकी बिक्री में तेजी आई। और अंत में, इसने अधिकतम सफलता पाई।

अमेरिका के बाद, भारत में सबसे ज्यादा डोमिनोज शाखाएं हैं। डोमिनोज इस्तेमाल करने वालों की संख्या करीब 10 लाख है। कंपनी ने ऐसे कई रिकॉर्ड तोड़े हैं।

प्रिय युवाओं! कभी हार न मानने वाले रवैये तथा दिल में एक आदमी को एक विजेता में बदलने की क्षमता होती है। किसी भी बात से निराश न हों, इसके बजाय उनका सामना करना शुरू करें! और विजेता और सफल व्यक्ति के रूप में उभरें!

क्या आपके जीवन में अशांति है? दु:ख-ही-दु:ख है? आँसू भरी ज़िन्दगी है?

यीशु छुड़ाता है सेवकाई आपके लिए

खुशखबरी लेकर आए हैं!

आपका मन पसंद कार्यक्रम

'आपका अद्भुत समय'

colors HINDI
Colors TV
हर शनिवार और
रविवार सुबह 6:30 से 7:00 बजे तक

॥ईश्वर॥
Ishwar TV
रोजाना - रात 9:30 से
10:00 बजे तक

YouTube
LIKE & SHARE

youtube.com/jesusredeemshindi

अपने चमत्कार को प्राप्त करने के लिए कार्यक्रम देखना न भूलें! आपका दु:ख आनंद में बदल जाएगा

यह कार्यक्रम उसी समय हमारे YouTube चैनल पर भी प्रसारित होगा।

'Jesus Redeems' Television Ministry, Nalumavadi - 628 211, Thoothukudi District, India.

प्रार्थना गाइड

नवंबर 2021

महिलाएं, बच्चे - उत्पीड़न

- पिछले साल 2020 में बलात्कार के 28,046 मामले दर्ज किए गए और 28,153 महिलाएं प्रभावित हुई।
- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो का कहना है कि प्रत्येक दिन बलात्कार के 77 नए मामले दर्ज किए जाते हैं।
- इसमें से 25,498 मामले 18 साल से ऊपर और 2,655, 18 साल से कम उम्र के हैं।
- अधिकतम मामले दर्ज करने वाले राज्यों में राजस्थान में 5,310 मामले, उत्तर प्रदेश 2,769 मामले, मध्य प्रदेश 2,339 मामले, महाराष्ट्र 2061 मामले और असम में 1,657 मामले हैं।
- बलात्कार के अलावा 85,392 मामले महिलाओं के खिलाफ दमन हमले के रूप में दर्ज हैं।

प्रार्थना विषय:

1. आइए हम महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें,
2. आइए हम उन महिलाओं और बच्चों के छुटकारे के लिए प्रार्थना करें जो बलात्कार से प्रभावित हैं।
3. आइए हम प्रतिदिन दर्ज होने वाले 77 बलात्कार के मामलों को कम होने और महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हिंसा की रोकथाम के लिए भी प्रार्थना करें।
4. आइए हम प्रार्थना करें कि देश में बलात्कार को रोका जाए और दर्ज बलात्कार के मामलों का शीघ्र समाधान किया जाए।
5. आइए हम प्रार्थना करें कि सरकार महिलाओं के खिलाफ दमन, तस्करी और दहेज को रोकने के लिए आवश्यक कार्रवाई करे।

सड़क दुर्घटनाएँ

- भारत में पिछले साल सड़क हादसों में 1.20 लाख लोगों की मौत हो चुकी है।
- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो का कहना है कि सड़क हादसों में हर रोज 328 लोगों की मौत होती है।
- पिछले 3 साल में 3.92 लाख लोग सड़क हादसों में अपनी जान गंवा चुके हैं।
- पिछले साल तेज रफ्तार के 1.30 लाख मामले दर्ज किए गए थे।
- तेज-गति से जख्मी करने पर दर्ज मामलों में 2020 में 85,920 मामले, 2019 में 1.12 लाख मामले और 2018 में 1.08 लाख मामले दर्ज किए गए।

प्रार्थना विषय:

1. हम प्रार्थना करें कि सड़क हादसों में होने वाली मौतें कम हो जाए और दुर्घटनाओं को रोका जाए।
2. आइए हम प्रतिदिन होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।
3. आइए उचित सुरक्षा के साथ नियमों और विनियमों का पालन कर सुरक्षित और धैर्यपूर्वक ड्राइविंग के बारे में जागरूकता के लिए प्रार्थना करें।
4. आइए हम उन लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करें जिनका दुर्घटनाओं के कारण गंभीर चोट का इलाज किया जा रहा है।
5. आइए हम सरकार के लिए प्रार्थना करें कि सड़कों की मरम्मत के लिए आवश्यक कार्रवाई करे, हेलमेट पहनने तथा नियमों का पालन करने के बारे में जागरूकता पैदा करे।

हत्या-अपहरण के मामले

- भारत में 2020 में हर दिन लगभग 80 लोगों की हत्या की जाती है। सिर्फ एक साल में 29,193 लोगों पर हत्या के आरोप लगाए गए हैं।
- उत्तर प्रदेश में 3,779 हत्या के मामले, बिहार में 3,150 मामले, महाराष्ट्र में 2,163 मामले, मध्य प्रदेश में 2,101 मामले, पश्चिम बंगाल में 1,948 मामले और दिल्ली में 472 मामले दर्ज किए गए हैं।
- 30-45 वर्ष की आयु में मारे गए पीड़ितों का प्रतिशत लगभग 38.5% है, 18-30 वर्ष की आयु में 35.9%, 45-60 वर्ष की आयु में 16.4% और 60 वर्ष से अधिक आयु के 4% हैं।
- पिछले साल 2020 में अपहरण के 84,805 मामले दर्ज किए गए हैं। 2019 में 1,05,036 मामले दर्ज किए

प्रार्थना विषय:

1. आइए हम भारत में हत्या की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।
2. आइए हम उस दुष्ट आत्मा के बाँधे जाने के लिए प्रार्थना करें जो हत्या के लिए उकसाती है और यह कि इससे और मौतें न हों।
3. आइए हम उस दुष्ट आत्मा के बंधन के लिए प्रार्थना करें जो एक नौजवान को हत्या के लिए उकसाती है और उनके भविष्य को नष्ट करने की कोशिश करती है।
4. आइए हम प्रत्येक कैदी के पश्चाताप के लिए प्रार्थना करें जिस पर हत्या का आरोप लगाया गया है और वे क्षमा मांगे और यीशु के लिए अपना जीवन जी सके।
5. आइए हम उन बच्चों और अन्य लोगों के बचाए जाने के लिए प्रार्थना करें जिनका अपहरण हुआ और प्रार्थना करें कि किसी अन्य बच्चे का फिर कभी अपहरण न हो।

ऑनलाइन धोखाधड़ी

- चूंकि पिछले 10 वर्षों में तमिलनाडु में पर्याप्त नौकरियां नहीं हैं, इसलिए शिक्षित युवा नौकरी की तलाश में दूसरे राज्यों और देशों में चले जाते हैं।
- यह सामान्य हो गया है कि उनमें से 50% से अधिक कुछ धोखेबाज समूहों द्वारा ठगे जाते हैं।
- उत्तरी राज्यों के धोखाधड़ी करने वाले समूह युवाओं से आकर्षक बातें कहकर पैसे वसूलते हैं जैसे कि वे घर से ऑनलाइन पैसा कैसे कमा सकते हैं।
- ये उत्तरी राज्य समूह मुख्य रूप से तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक राज्यों के युवाओं को लक्षित करते हैं।
- पिछले 2 वर्षों में इस समूह द्वारा ठगे गए पीड़ितों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

प्रार्थना विषय:

1. आइए प्रार्थना करें कि तमिलनाडु सरकार पर्याप्त रोजगार उत्पन्न करे ताकि युवा अपने राज्य में काम कर पाएं।
2. आइए हम प्रार्थना करें कि ऐसे धोखेबाज गिरोहों को चकमा देने के लिए युवाओं में समझदारी हो और उन्हें नौकरी के अच्छे अवसर मिले।
3. आइए हम उन युवाओं के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने इस तरह के उत्तरी धोखेबाजों को अपना पैसा खो दिया है और उन्हें अपना पैसा वापस मिलने पाए।
4. आइए हम पुलिस से प्रार्थना करें कि ऐसे धोखाधड़ी करने वाले गिरोहों की पहचान करें और उन्हें सजा दे ताकि भविष्य में ऐसे अपराधों को रोका जा सके।
5. आइए हम धैर्यपूर्वक पूछताछ में बुद्धि से काम लेने और धोखेबाजों द्वारा धोखा न खाने के लिए प्रार्थना करें।

क्या सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना ठीक है?

सही या गलत?

मसीह में मेरे प्यारे भाइयों एवं बहनों, यीशु मसीह के अतुल्य नाम में आपको बधाई। सोशल मीडिया (एफ. बी., ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप) ने इतनी लोकप्रियता हासिल की है कि सोशल मीडिया अकाउंट के बिना हमारे बीच कोई नहीं है और यदि कोई इसका इस्तेमाल नहीं कर रहा है तो दुनिया उन्हें अलग तरह से देखती है और उन्हें बेकार मानती है। हालाँकि इस पर बहुत सारी चर्चाएँ और बहसें चल रही हैं, लेकिन इसे वचन के प्रकाश में देखना और इसकी जाँच करना और उसके अनुसार चलना सबसे अच्छा है।

पर जागते हुए करते हैं और इसे पूरे दिन अपने साथ ले जाते हैं, यहां तक कि जब वे शौचालय, बाथरूम में होते हैं, यात्रा करते, खाते हैं और सोने से पहले भी वे तब तक इसे देखते रहते हैं जब तक कि उनकी पलकें थक कर बंद न हो जाएं। जब कोई कहता है कि उनके पास प्रार्थना करने का समय नहीं है और इसके बजाय अपने सोशल मीडिया फीड के माध्यम से घंटों स्क्रॉल करते हैं, तो इसका मतलब केवल यह हो सकता है कि वे परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं और उनका अपमान करते हैं। यह परमेश्वर को धोखा देना है, जब हम बाइबल नहीं पढ़ते हैं, लेकिन बाइबल के पदों को अपने व्हाट्सएप स्टेटस में डालते हैं। जब हम परमेश्वर की स्तुति करने के लिए समय नहीं देते हैं, लेकिन अपने सोशल मीडिया पर स्तुति गीत साझा करते हैं, तो यह जानबूझकर किया गया पाप है। बाइबल में, हम यिर्मयाह 48:10 में पढ़ते हैं, "श्रापित है वह जो यहोवा का काम (प्रार्थना, स्तुति, बाइबल पढ़ना, सेवकाई) आलस्य से करता है।" जब हम जागते हैं, तो क्या हम परमेश्वर का चेहरा देखते हुए परमेश्वर के वचन को देखते हैं, या क्या हम फेसबुक के चेहरे पर जागते हैं? हमें विचार करना चाहिए कि क्या हम परमेश्वर की समानता से संतुष्ट हैं या हम व्हाट्सएप

क्या वाकई सोशल मीडिया जरूरी है?

फेसबुक, व्हाट्सएप और अन्य सोशल मीडिया कुछ अच्छे कारणों से जरूरी हैं। हमारे दोस्तों तक पहुंचना, हमारी देखभाल और स्नेह को साझा करना उपयोगी है। आज कई लोग सोशल मीडिया के माध्यम से भी परमेश्वर के नाम की महिमा करते हुए सेवकाई करने लगे हैं। इसलिए, इसे ठीक से कैसे संभालना है, यह जानने के बाद सोशल मीडिया का उपयोग करना ठीक है।

मेरा समय कहाँ है?

कई लोगों के लिए, सोशल मीडिया उनके जीवन का एक अभिन्न अंग है। वे अपने दिन की शुरुआत सोशल मीडिया

स्टेटस से संतुष्ट हैं? (भजन 17:15)

क्या गलत है?

कोई पूछ सकता है कि सोशल मीडिया का उपयोग से पाप किसी के जीवन में कैसे प्रवेश कर सकता है? इंटरनेट पर अच्छी बातों से ज्यादा कई धोखेबाज और बुरी चीजें मौजूद हैं। यह हमारे विचारों को कलंकित और भ्रष्ट करेगा। जब हम लगातार फोन का इस्तेमाल करते हैं तो यह हमारे शरीर में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं लाता है। यह पारिवारिक संबंधों में विभाजन का कारण बनता है। अपने सोशल मीडिया दोस्तों की खातिर, अपने प्यारे परिवार को मत खोएं, जो आपके प्यार व स्नेह की आशा ते प्रतीक्षा करता

है। यह पति-पत्नी के बीच विवाद का कारण बनता है और परिवार में शांति को नष्ट करता है। बच्चे अपने माता-पिता के प्यार की तलाश करते हैं और यदि यह उन्हें नहीं मिलता है तो वे भटक जाते हैं। इस तरह की बहुत सी बातों के उदाहरण दिए जा सकते हैं। शायद, ऊपर बताई गई कुछ बातें आपके जीवन में भी हुई होंगी।

परमेश्वर का वचन क्या कहता है?

"... जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आपको दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो ..." (रोमियों 6:16)। हमारे मामले में, हम आज्ञा नहीं मान रहे, बल्कि हम सोशल मीडिया के काबू में हैं और इसके गुलाम हैं। यह प्रश्न पूछकर अपने आप को परखें: जब आपको खाली समय मिलेगा, तो क्या आप सोशल मीडिया का उपयोग किए बिना रह पाएंगे? यदि नहीं, तो इसका मतलब है कि आप इसके आदी हो गए हैं। पूरे दिन के लिए, यदि आप केवल कॉल उठाते हैं और किसी अन्य उद्देश्य के लिए अपना फोन नहीं उठा पाते हैं, तो यह संकेत देता है कि आप इसके आदी नहीं हैं। यदि आप खुद को आदी बने रूप में देखते हैं, तो अपनी आत्मा के प्रति सावधान रहें (रोमियों 7:23)। यदि आप अपने परिवार के किसी भी बुजुर्ग को अपना फोन देने या दिखाने में असमर्थ हैं, तो जान लें कि आप पाप के एक बड़े बंधन में फंस गए हैं। कृपया जान लें कि हर दिन अपने मोबाइल फोन के सामने जागने की आदत आपकी आत्मा को नष्ट कर रही है और आपको इसे हराना चाहिए। हमारे दिन की शुरुआत प्रभु के चेहरे को खोजते और उनके वचन को पढ़ने से होनी चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि, भजन 130:6 के अनुसार, "यदि हमारी आत्मा प्रभु के लिए नहीं तरसती है, तो हमारा आत्मिक जीवन गुनगुने अवस्था में होगा, न गर्म और न ही ठंडा, जिसे प्रभु अपने मुंह से उगल देंगे।"

सेल्फी या स्वार्थी?

सेल्फी के प्रति दीवानगी के चलते युवा अपनी जिंदगी को अयोग्य समझकर कई तरह के जोखिम उठाते हैं। कभी-कभार सेल्फी लेना और हमारे परिवार को भेजना कोई समस्या नहीं है। इसके बजाय, हममें से ज्यादातर लोग सेल्फी लेने के इतने आदी हैं। बाइबल कहती है कि अंत के दिनों में लोग खुद से प्रेम करनेवाले/स्वार्थी होंगे, (2 तीमुथियुस 3:2, 5) जिनका दिखावा भक्ति का सा होगा, लेकिन वे इसकी सामर्थ्य का इन्कार करेंगे। हमें देखकर केवल परमेश्वर को ही आनन्दित होना चाहिए, और यह विचार कि दूसरे हमें देखें और आनंद लें, व्यभिचार के बराबर है। इस विचार के लोग शत्रु के जाल में फंसेंगे और खतरों का सामना करेंगे (सभोपदेशक 9:12)। कई युवा लड़कियां फंस गई हैं और पीड़ित हैं। प्यारे भाइयों और बहनों! सावधान रहें। इन फंदों से भागें। लंबे समय तक गपशप करना भी हमें पाप में ले जाएगा। (2तीमुथियुस 2:16)

क्या सोशल मीडिया सेवकाई सही है?

मेरे प्यारो! सोशल मीडिया सेवकाई में आने से पहले, आइए हम अपने परिवार के सदस्यों के बीच एक गवाह बनकर अपने घर में अच्छा नाम कमाएं। "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" कृपया सोशल मीडिया पर अनावश्यक बहस, वाद-विवाद और लड़ाई-झगड़े से बचें।

दूसरों की मदद करने की अपनी तस्वीरें, दुष्टात्माओं को निकालने, अन्य भाषा में प्रार्थना करने के वीडियो अपलोड करके परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लें। दूसरों की सहमति के बिना उनकी तस्वीरें इंटरनेट पर अपलोड न करें। जांचें कि आपका स्टेटस और वॉल, तथा पेज बाइबल के पदों भरा है या नहीं। 'यदि हम खुद का न्याय करेंगे, तो हमारा न्याय नहीं होगा।' भक्ति में खुद को प्रशिक्षित करें (1तीमुथियुस 4:7)। यदि आपको लगता है कि आप मजबूती से खड़े हैं, तो सावधान रहें कि आप गिर न जाएं! (1कुरिन्थियों 10:12) बुद्धिमानी से सोचें और कार्य करें

मौन युद्ध

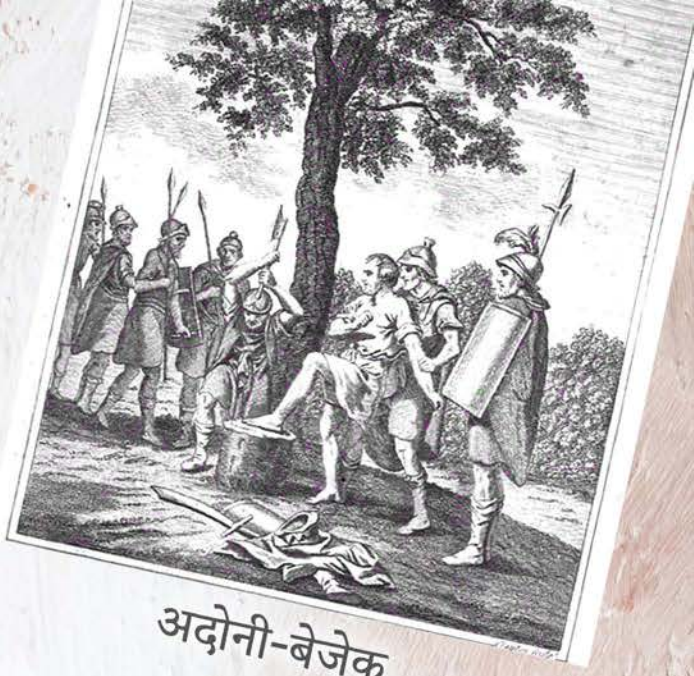

अदोनी-बेजेक

इस्राएलियों के जीतने से पहले अदोनी-बेजेक कनान का राजा था। यहोशू की मृत्यु के बाद इस्राएलियों ने यहोवा से पूछा, कि कौन पहिले जाकर कनानियों से लड़ेगा? यहोवा ने कहा, "यहूदा के गोत्र जाएंगे।" जैसा कहा गया था, वे चले गए, और यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उनके हाथ में कर दिया। यहूदा के गोत्रों ने शिमोन के गोत्रों के साथ अदोनी-बेजेक का पीछा किया और उसके अंगूठे और पैर की उंगलियों को काट दिया। यहोवा इस्राएलियों को अदोनी-बेजेक के विरुद्ध लाया और उसे उसकी करनी का पलटा दिया। यह पवित्र बाइबल में न्यायियों 1:1-7 की पुस्तक में वर्णित किया गया है।

जिस समय अदोनी-बेज़ेक अपने विरोधियों से हार रहा था, उस समय उसने निम्नलिखित दो आंतरिक आवाज़ें सुनी होंगी:

आवाज 1: मेरा स्वभाव कैसा है? मेरा बल क्या है? मैं अब तक 70 राजाओं को वश में कर चुका हूँ।

आवाज 2: क्या प्रभु ने मेरी सहायता की? निश्चय ही यह आश्चर्य की बात है कि मैंने इन सभी राजाओं पर विजय प्राप्त की।

आवाज 1: इन सभी राजाओं को क्या सजा दी जाएगी? क्या उन्हें मार दिया जाएगा?

आवाज 2: या मैं उन्हें माफ कर दूं? क्योंकि मैंने सुना है, "जो कुछ हम बोएंगे, वही काटेंगे"

आवाज 1: क्षमा करना? संभव ही नहीं! उन्हें जरूर सजा दूंगा।

आवाज 2: क्या होगा अगर मैं उन्हें जीवन भर के लिए कैद कर दूं?

आवाज 1: अगर वे जेल से भाग जाते हैं तो वे मेरे अन्य विरोधियों के साथ मुझसे बदला लेने आ सकते हैं।

आवाज 2: मुझे एक सोची समझी सजा देनी चाहिए कि भविष्य के लिए लोग मेरी बुद्धि और कौशल के बारे में बात करें।

आवाज 1: क्या होगा यदि हम उन्हें अंगहीन कर दें। रिहा होने पर भी, वे मेरा कुछ बुरा नहीं कर सकते।

आवाज 2: जो मनुष्य के द्वारा अपंग हो वह भी अपंग होगा, व्यवस्था कहती है। क्या होगा अगर मैं हार जाऊं और वही सजा मुझे दी जाती।

आवाज 1: कुछ नहीं होना चाहिए और कुछ नहीं होगा। मेरे विरोधियों के अंगूठे और पैर की बड़ी उंगलियों को काट दिया जाना चाहिए ताकि वे तेज न दौड़ें या तीर न चलाएँ। वे सैनिकों या युद्ध नायकों के रूप में नहीं रह सकते। चाहे वे छूट भी जाएँ या भाग जाएँ, फिर भी कोई परेशानी नहीं होगी।

इस प्रकार; अदोनी-बेजेक की अंतरात्मा की आवाज ने उससे बात की होगी।

उसने अपने बुरे विवेक की बात सुनकर बंदी बना लिए गए राजाओं के अंगूठे और पैर की अंगुलियों को काट दिया। वे खाने के लिए उसकी मेज के नीचे के टुकड़े उठाते थे।

जब राजा अदोनी-बेजेक को यहूदा और शिमोन के गोत्रों द्वारा पकड़ लिया गया, तो उसके अंगूठे और पैर की बड़ी उंगलियों को काट दिया गया। "जैसा मैंने किया है, वैसे ही परमेश्वर ने मुझे चुकाया" उसने कहा। (न्यायियों 1:7)

प्रिय पुत्र और पुत्री, हमारे परमेश्वर का एक नाम "पलटा लेनेवाला परमेश्वर" है। अय्यूब ने कहा, "वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्येक को अपनी-अपनी चाल का फल भुगताता है" (अय्यूब 34:11)।

"मैं यहोवा मन को खोजता और हृदय को जाँचता हूँ ताकि प्रत्येक जन को उसकी चाल-चलन के अनुसार अर्थात् उसके कामों का फल दूँ।" (यिर्मयाह 17:10) ऐसा बताता है, अपने कार्यों और विचारों को दूसरों के लिए अच्छा होने दें। बुद्धिमानी से कार्य करने और अपने शत्रुओं का भी भला करने के लिए सावधान रहें। क्योंकि पलटा लेने की जिम्मेदारी खुद परमेश्वर ने ली है।

"क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" गलातियों 6:7

To Maintain a Good Relationship

Do not advice anyone unless they ask for it

Stop thinking about what others are doing and try to enhance yourself

If you get angry, move away from the room

Appreciate others for their good deeds

Never keep commenting about others responsibilities

Help others only when they ask for it

Your love should not affect any-one's rights

You live your life and in the same way let others to live theirs

Respect everyone, whomever it may be... as you give so shall you receive

You are not superior to anyone neither are you interior. Stand strong in this notion

ख्रिस्त-मत की विशेषताएँ

एक महान पद जो परमेश्वर देते हैं:

'परमेश्वर प्रदत्त दिव्य पद' के विषय पर मनन करने जा रहे हैं। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, मसीहत में बहुत से असाधारण गुण हैं। और इन गुणों में विशेष गुण वह महान पद है जो परमेश्वर उन्हें देते हैं जो उन्हें अपना परमेश्वर व उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। किसी अन्य धर्म में इस तरह की अभिव्यक्ति नहीं है।

वह दैव्य पद क्या है? चलिए देखते हैं। बाइबल कहती है, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। (यूहन्ना 1:12,13) इस पद के आधार पर, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि जो कोई यीशु मसीह को ग्रहण करेगा, उसमें नया जन्म होगा और वे परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे।

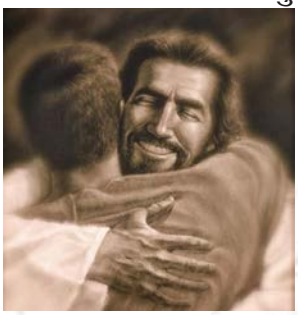

यह कैसे संभव है? यह समझ आने लायक कैसे है? जब मेरा जीवन पापों और अधर्मी बातों से भरा है, तो मैं परमेश्वर की सन्तान कैसे बन सकता हूँ? आप सोच सकते हैं। लेकिन प्रिय मित्रों, बाइबल कहती है, "परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।" आप जिस भी धर्म या विश्वास प्रणाली पर विचार करें, उच्च शक्ति और मनुष्यों के बीच के संबंध को हमेशा ऐसे संबोधित किया जाएगा, जैसे परमेश्वर-मानव, या ईश्वर-मनुष्य, या एक शक्ति-मनुष्य। केवल ख्रिस्त-मत में, विश्वासियों को परमेश्वर की संतान के रूप में संबोधित किया जाता है।

इसके बारे में सोचें। हमारे चारों ओर सब कुछ बनाने वाले सर्वशक्तिमान परमेश्वर की संतान कहलाना कितना बहुमूल्य है। यह किसी को प्राप्त होने वाला अब तक का सबसे अच्छा उपहार है। और इस उपहार को प्राप्त करने के लिए, आपको यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के अलावा और कुछ नहीं करना है। क्योंकि यीशु ने क्रूस पर हमारे लिए सब कुछ किया है।

इसलिए, हम उन्हें, हमारे पिता (अब्बा) कह सकते हैं। मेरे प्यारे मित्रों, भले ही आपके सांसारिक पिता ने आपको त्याग दिया हो, हमारे पास एक स्वर्गीय पिता है जो हमें कभी नहीं छोड़ेगा। इसलिए, मैं चाहता हूं कि आप सभी यह जानें व महसूस करें कि हमें कभी त्यागा नहीं जा सकता है। जब भी कोई आपसे पूछे कि आप कौन हैं, तो उन्हें गर्व से उत्तर दें, "मैं परमेश्वर की संतान हूं।"